जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

ISSN 2454-4450

मूल्य ₹ 75

हंस

जुलाई 2025

संपादक
संजय सहाय
•
प्रबंध निदेशक
रचना यादव
•
व्यवस्थापक/सह-संपादन सहयोग
वीना उनियाल
•
संपादन सहयोग
शोभा अक्षर
माने मकर्तच्यान(अवैतनिक)
•
प्रसार एवं लेखा प्रबंधक
हारिस महमूद
•
शब्द-संयोजन एवं रूपांकन
प्रेमचंद गौतम
•
ग्राफिक्स
साद अहमद
•
कार्यालय सहायक
किशन कुमार, दुर्गा प्रसाद
•
मुख्य प्रतिनिधि (उ.प्र.)
राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल
•
रेखाचित्र
मार्टिन जॉन, राजेंद्र गायकवाड़, रोहित प्रसाद, कृष्ण कुमार 'अजनबी'

कार्यालय
अक्षर प्रकाशन प्रा. लि.
4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-2
व्हाट्सऐप : 9717239112, 9560685114
दूरभाष : 011-41050047
ईमेल : editorhans@gmail.com
वेबसाइट : www.hanshindimagazine.in

मूल्य : 75 रुपए प्रति
वार्षिक रजिस्टर्ड : 1250 रुपए (व्यक्तिगत)
संस्था/पुस्तकालय : 1500 रुपए (संस्थागत)
वार्षिक पीडीएफ : 600 रुपए (व्यक्तिगत)
पीडीएफ : 700 रुपए (संस्थागत)
विदेशों में : 80 डॉलर
सारे भुगतान मनीऑर्डर/चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा. लि. (Akshar Prakashan Pvt. Ltd.) के नाम से किए जाएं.

हंस/अक्षर प्रकाशन प्रा.लि. से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे. अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है. हंस में प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखकों के अपने हैं. उनसे हंस की सहमति अनिवार्य नहीं है. साथ ही उनके मौलिक या अप्रकाशित होने का उत्तरदायित्व संपादक और प्रकाशक का नहीं है बल्कि यह दायित्व रचनाकार का है.

प्रकाशक/मुद्रक : **रचना यादव खन्ना** द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा.लि., 4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित एवं चार दिशाएं, जी-39/40, सेक्टर-3, नोएडा- 201301 (उ.प्र.) से मुद्रित. संपादक–संजय सहाय.

जुलाई, 2025

मूल संस्थापक : **प्रेमचंद : 1930**
पुनर्संस्थापक : **राजेन्द्र यादव : 1986**

पूर्णांक-465 वर्ष : 39 अंक : 12 जुलाई 2025

आवरण : अंतरिक्ष

जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

इस अंक में

संपादकीय
4. पैक्स अमेरिकाना! : संजय सहाय

अपना मोर्चा
7. पत्र

न हन्यते
11. नीलकांत : औघड़पन का वैभव : विनोद तिवारी
14. न्गुगी : क्रांतिकारी बदलाव के पक्षधर : आनंद स्वरूप वर्मा

मुड़-मुड़ के देख
18. योद्धा : श्याम जांगिड़ ('हंस', दिसंबर 1988)

कहानियां
30. तन्हाई : राजेन्द्र चन्द्रकांत राय
34. लम्हे : संतोष दीक्षित
40. भीड़ में अकेला : कामेश्वर
46. नींद : राजेन्द्र श्रीवास्तव

कविताएं
54. अर्चना लार्क, शहंशाह आलम
55. राकेश रंजन, भावना झा

ग़ज़ल
39. माणिक विश्वकर्मा 'नवरंग'
84. सुनील कुमार शर्मा 93. मनस्वी अपर्णा

लेख
56. हिंदी समाज ने आधुनिक हिंदी साहित्य को खारिज कर दिया है? : अशोक वाजपेयी

आधुनिक पाश्चात्य दर्शन और साहित्य
62. आधुनिक साहित्य की विकास यात्रा-3 : अनिल यादव

आराम नगर
67. 'फुले' : बहुजन सशक्तीकरण का बृहद आख्यान : रमाशंकर सिंह

लघुकथा
66. महावीर राजी

परख
70. विभाजन की स्मृतियों का जीवंत चित्र : महेश दर्पण
74. वैचारिक मुठभेड़ के निर्णायक मोड़ की शुरुआत : श्रीधर करुणानिधि
77. स्त्री आत्मकथाओं के मूल्यांकन की फलश्रुति : स्वप्निल श्रीवास्तव
81. दृश्य के भीतर का अदृश्य... : महेश मिश्र
85. हिंदी कहानियों के पुनर्पाठ... : ख़ालिद जावेद
87. प्रासंगिक हैं विद्यापति : कृष्ण कुमार झा

साहित्यनामा
89. सहज-सहज सबही कहें, सहज न चीन्हे कोई : साधना अग्रवाल

शब्दवेधी/शब्दभेदी
94. युद्ध की तैयारी में जुटे... : तसलीमा नसरीन

रेतघड़ी
96

पैक्स अमेरिकाना!

पिछले कुछ हफ्तों से इज़राइल और ईरान में घमासान जारी है. एक लंबे अरसे से अपने कातिल गिरोह मोसाद और अमेरिकी भिक्षा के सहारे वे ईरान में लगातार उत्पात मचाते आ रहे थे. अमेरिका, इस इलाके में बहाल किए गए उसके लठैत और उसके यूरोपीय हिमायतियों की घबराहट का मुख्य कारण है, ईरान का नाभिकीय शक्ति बनने की ओर कदम बढ़ाना! इसे रोकने के लिए अमेरिका हर तरह का प्रपंच रचता आया है. हाथ गंदे करने वाले सारे कृत्यों के लिए उसका लठैत तो है ही. अपुष्ट जानकारी के अनुसार अमेरिका से चंदे में मिले दर्जनों परमाणु अस्त्र इज़राइली शस्त्रागार में मौजूद हैं. पश्चिम की टेक पर ही वह भारी-भरकम तुर्रम ख़ां बना घूम रहा है. इतना बड़ा कि हमारे मुल्क के अनेक छोटे-बड़े देवता भी उसे सर्वशक्तिमान मान बैठे हैं. पश्चिम इस बात से दहशतजदा रहा है कि इस्लामिक मुल्क के नाभिकीय शक्ति बन जाने पर आगे-पीछे ये हथियार दहशतगर्दो के हाथ लग जा सकते हैं. विडंबना यह है कि इन कट्टरपंथियों को समय-समय पर पैदा और पोषित करने में अहम भूमिका भी इसी पश्चिम की रही है. इस भय को इज़राइल लगातार हवा देता रहा है और उसे जमकर भुनाता रहा है, जबकि तथ्य यह है कि यहूदियों में कट्टरपन अन्य धर्मावलंबियों की अपेक्षा कई गुना ज्यादा है. सूअर खाने को वह भी हराम समझते हैं. उनके लिए नमक से लेकर पीने का पानी तक अगर कोशर (यहूदियों का हलाल) नहीं है, तो वे उसे छुएंगे भी नहीं. और भी अनेक मामलों में वे भयंकर रूढ़िवादी रहे हैं. दुनिया की किसी भी फिरकापरस्त कौम से कहीं ज्यादा! खुद को औरों से श्रेष्ठ मानने की विकृत सोच ने भी उन्हें जकड़ रखा है. यह अकारण नहीं है कि 17वीं शताब्दी का महान दार्शनिक बेनेडिक्ट दी स्पिनोज़ा (1632-1677) लिखता है, ''यहूदियों ने खास होने की अकड़ में खुद को सबसे इस तरह काट लिया है कि वे दुनिया की नजरों में नफरत के पात्र बन गए हैं. इसमें उनके दकियानूसी रस्मो-रिवाज की भी बड़ी भूमिका रही है.'' ध्यान रहे स्पिनोज़ा स्वयं पुर्तगाली यहूदी मूल का था.

बहरहाल, एक लंबे अरसे से इज़राइल अपने और अपने आकाओं के लिए ईरान के महत्वपूर्ण लोगों की हत्याओं को दूर से ही अंजाम दे रहा था. उन पर मनमर्जी हमला कर रहा था मानो वह ईरान न होकर गज़ा पट्टी की निरीह लोगों की कोई बस्ती हो. अब पहली बार इज़राइलियों के मुंह पर जोर का थप्पड़ पड़ा है. इतना झन्नाटेदार कि उसकी आवाज से नेतन्याहू तो नेतन्याहू, श्रीमान ट्रम्प तक के भी गाल झन्ना उठे हैं. इज़राइलियों की बैंड बजती देख 21 जून को ट्रम्प ने ईरान पर सीधी बमबारी आरंभ करते हुए तीसरे विश्व युद्ध का खतरा बढ़ा दिया है. उन्होंने दो विकल्प दिए थे कि ईरान का पूर्ण आत्मसमर्पण या फिर पूर्ण विनाश! इस गीदड़भभकी के आगे घुटने टेकने की बजाय ईरान ने क़तर में स्थित अमेरिकी अड्डों पर 14 बैलिस्टिक मिसाइलें